कुछ बच्चों को टीकों के बाद दौरे पड़ जाते हैं। ऐसा टीकों की वजह से नहीं होता। इन बच्चों में ड्रवेट सिंड्रोम (Dravet Syndrome) की सम्भावना होती है। इसमें न्यूरोलॉजिस्ट की सलाह जरूरी होती है।

खून की कमी का बुखार के दौरों से क्या संबंध है ?

बच्चों में दिमाग का विकास मुख्यतया गर्भावस्था व जन्म के बाद पहले 3 साल में होता है। मस्तिष्क के विकास में आयरन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। आयरन दिमाग में माइलेशन के लिये जरूरी होता है। अधिकतर शिशुओं में जन्म के वक्त आयरन की मात्रा प्रयाप्त होती है। यह मात्रा बहुत कुछ माँ के स्वास्थ्य, गर्भावस्था की अवधि, स्तन जन्म के तुरंत बाद की परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

समय पूर्व जन्में बच्चों में यह कमी 12 माह में ही होने लगती है।

जानवर का दूध पीने वाले शिशुओं में यह कमीजल्दी होने लगती है।

पहले 3 साल में आयरन की कमी का बच्चे के व्यवहार और मानसिक विकास पर बुरा असर पड़ता है। यदि यह कमी समय पर पूरी नहीं हो तो दिमाग की शक्ति हमेशा के लिए थोड़ी कम हो जाती है।

आयरन की कमी बुखार से होने वाले दौरों की सम्भावना को बढ़ा देती है। इसलिए इन बच्चों में खून की कमी का पता लगाने के लिए जरूरी जाँच करवायें व खून की कमी का इलाज करवायें।

आयरन की कमी रोकने के लिए सभी शिशुओं को 6 माह की उम्र के बाद आयरन युक्त शिशु आहार देना चाहिये व शिशु रोग विशेषज्ञ की सलाह से आयरन टॉनिक दिलवायें।

fever prophylaxis:

1. Thermometer
2. Syp Crocin DS (5ml-240 mg)..... ml 4 times a day during febrile illness
3. Syp Ibugesic (5ml-100mg) .... ml alternate with Crocin upto three times a day
4. Midacip Spray ..... puffs if seizure > 5 minutes

JAIPUR CHILD NEURO CARE

बुखार में आने वाले दौरे

सूचना पत्र

DR. VIVEK JAIN

Child Neurologist and Epileptologist

MD(PGI, Chandigarh), FRCPCH(UK)

CCT(UK) child Neurology

www.jaipurchildneuro.com

vivekchildneuro@gmail.com

Appointment / Helpline No:

08529222600

दौरा क्या होता है ?

हमारा मस्तिष्क छोटी छोटी कोशिकाओं से बना होता है, जिन्हें तंत्रिकाएं कहते हैं। इन्हीं तंत्रिकाओं के अत्यधिक उत्तेजित होने से दौरे आते हैं।

सामान्य भाषा में इसे फिट, तान, दौरा, झटका खेंचया चमकी कहते हैं। इसके कई प्रकार हो सकते हैं जैसे :-

- पूरे शरीर या शरीर के किसी हिस्से में रह-रह कर खिंचाव होना।
- आंखे या चेहरे का एक तरफ हो जाना।
- कुछ समय के लिए बेहोशी आ जाना।
- असामान्य संवेदना या अनुभूति, जैसे डर लगना, कुछ दिखाई या सुनाई देना।
- एकटक देखना या अपने में गुम हो जाना।

बुखार में आने वाले दौरे क्या होते है ?

बुखार में होने वाले दौरे (फिट) बच्चों की एक आम समस्या है। बुखार की कोई भी वजह हो सकती है।

6 माह से 6 साल की उम्र में 100 बच्चों में 5 बच्चों को बुखार में दौरा पड़ने की रिस्क रहती है।

इसकी शायद एक वजह बच्चों का दिमाग अविकसित होना है, इसलिए उस पर बुखार का आसामान्य प्रभाव पड़ता है।

कई बार यह समस्या आनुवंशिक भी होती है। (पीढ़ियों और परिवार के अन्य सदस्यों में भी इस बीमारी का होना)

फिट के दौरान आपका बच्चा अकड़ जाता है या ढ़ीला पड़ सकता है। कई बार वह बेहोश हो जाते हैं, आस-पास की घटनाओं का ध्यान नहीं रहता है। और हाथ पैरों में झटके महसूस होते हैं।

जिन बच्चों को पहला दौरा कम उम्र में (15 माह से कम) पड़ जाता है या परिवार के किसी सदस्य में ऐसी ही शिकायत है, उन्हें बार-बार दौरे पड़ सकते हैं।

बच्चे को दौरा पड़ने पर क्या करें ?

घबरायें नहीं। शांत रहें। बच्चे के साथ रहें।

डॉक्टर आपसे हमेशा यह पूछतें हैं कि दौरा कितनी देर तक चला? हो सके तो दौरे के शुरू होने और खत्म होने का समय नोट करें।

बच्चे को एक तरफ करवट करके लिटाएं। बच्चे केकपड़े ढ़ीले कर दें। बच्चे के सिर के नीचे मुलायम कपड़ा रखे, जिससेसिर फर्श से ना टकराए।

बच्चे को पकड़ने या दौरे को रोकने की कोशिश नहीं करें।

बच्चे के मुँह में कुछ नहीं डालें। बच्चे के मुँह औरनाक से आने वाला पानी और झाग साफ करें।

बच्चे को सुरक्षित जगह पर लिटाएं आग, फर्नीचर के तीखे कोनों, धारदार चीजों से दूर रखें। अगर बच्चा चश्मा लगाता है तो उतार दें।

अधिकतर दौरे 5 मिनट से कम समय में ही अपने आप रुक जाते हैं। कई बार असामान्य स्थिति में यह समय लम्बा भी हो जाता है। अगर दौरा 5 मिनट से ऊपर हो तो दौरा कंट्रोल करने के लिये मिडाजोलम नेजल स्प्रे का इस्तेमाल करें।

हर स्थिति में अपने डॉक्टर के पास तुरंत ले जाएँ । डॉक्टर देखने के बाद ही बता सकते हैं कि बच्चे को कोई गंभीर समस्या तो नहीं है और बच्चे को अस्पताल में भर्ती करने की जरुरत है या नहीं।

कई बार दौरा रुकने के तुरंत बाद बच्चा सुस्त हो जाता है और सोना चाहता है। जब तक आपका बच्चा सामान्य नहीं लगने लगे, तब तक उसे पानी, खाना, या मुंह से दी जाने वाली दवाईयाँ नहीं दें।

नाक से मिडाजोलम स्प्रे देने का तरीका

बच्चे को चित्र के अनुसार किसी एक करवट में लिटाएं।

मिडाजोलम स्प्रे के नोजल को हल्के से किसी एक नासिका छिद्र के अंदर डालें।

बोतल की नोजल को नीचे की तरफ दबाएं. इससे दवा छिद्र के अंदर जाती है।

अपने चिकित्सक की सलाह के अनुसार निर्दिष्ट संख्या में स्प्रे करें।

शिशु को अस्पताल में कब भर्ती करवायें ?

- दौरे के बाद बच्चा सामान्य अवस्था में नहींआये।
- दौरा असामान्य (15 मिनट से ज्यादा, शरीर के एक हिस्से में या 24 घंटे में 1 से अधिक बार) हो।
- माँ-बाप बच्चे को अस्पताल में रखना चाह रहे हो।

क्या इस बीमारी में जाँच करवाना जरूरी है ?

बुखार में आने वाले दौरों में सामान्यतया जाँच नहीं की जाती है।

- आवश्यकता अनुसार बुखार का कारण जानने के लिए खून व पेशाब की जाँचे की जाती है।
- अगर बच्चा 18 माह से छोटा है और दिमागी संक्रमण की सम्भावना है तो डॉक्टर रीढ़ की हड्डी से पानी (CSF) की जाँच की सलाह देते हैं क्योंकि छोटे बच्चे की शारीरिक जाँच से दिमागी संक्रमण का पता चलना मुश्किल होता है।
- कभी कभी जरुरत के हिसाब से सी. टी. स्कैन / एम. आर. आई./ ई. ई. जी. करने की सलाह भी दी जाती है।

न्यूरोलॉजिस्ट को कब दिखाएँ ?

- बुखार में बच्चे को दौरे पड़ना एक सामान्य समस्या है। अधिकतर बच्चे 6 साल की उम्र के बाद ठीक हो जाते हैं। सामान्य दौरों से बच्चे के विकास पर भी फर्क नहीं पड़ता।
- कुछ विशेष परिस्थितियों में अपने शिशु रोग विशेषज्ञ की सलाह से न्यूरोलॉजिस्ट की सलाह भी जरुरी होती है। जैसे दौरे असामान्य प्रकार के हों, दौरे बार - बार पड़ रहे हो, बच्चे को पहले से कोई दिमागी बीमारी हो या विकास धीमा हो।

क्या बच्चे को बुखार आने पर दौरा दुबारा आ सकता है?

हाँ, यह संभव है। पहले दौरे के बाद दूसरा दौरा आने की सम्भावना लगभग 30% होती है। बुखार में दुबारा दौरा पड़ने की सम्भावना कई बातों पर निर्भर करती है। जैसे-

- पहली बार दौरा किस उम्र में पड़ा?
- दौरे के समय बुखार कितना तेज था?
- बुखार शुरू होने के कितने घंटे बाद दौरा पड़ा?
- क्या परिवार में किसी और को भी बुखार मेंदौरा पड़ा था या मिर्गी की बीमारी है?
- बुखार में दौरा किस प्रकार का था?

बच्चे की उम्र 6 वर्ष होने के बाद दौरा आने की सम्भावना लगभग न के बराबर हो जाती है।

क्या बच्चे को भविष्य में मिरगी की बीमारी हो सकतीहै ?

बुखार के सामान्य दौरे के बाद 100 में से केवल 1-2 बच्चों को ही मिरगी की शिकायत हो सकती है। निम्न स्थितियों में यह सम्भावना सामान्य से ज्यादा (4-33%) हो सकती है-

- अगर बुखार के दौरे बार- बार पड़ रहे हों।
- दौरा बुखार शुरू होने के 1 घंटे के भीतर पड़ा हो।परिवार में मिरगी की शिकायत हो।
- बच्चे में पहले से कोई दिमागी बीमारी हो।
- दौरे असामान्य हों - (15 मिनट से ज्यादा, शरीर के एक हिस्से में या 24 घंटे में 1 से अधिक बार)

बुखार में आने वाले दौरे की रोकथाम के लिए क्या करें?

बुखार के लिए डॉक्टर द्वारा बताई गई दवा की सही मात्र दें। बुखार नापें व लिखे। यह दवा बच्चे को बुखार से होने वाली तकलीफ कम करती है। याद रखें यह दवा दौरे को नहीं रोकती है। -कुछ दवाइयाँ बुखार से होने वाले दौरों को रोकने के लिए भी दी जाती है। इन दवाइयों का इस्तेमाल डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही करें।

बच्चों के टीके क्यों जरूरी है ?

इन बच्चों को जहाँ तक संभव हो बुखार नहीं आने दें। बुखार से कैसे बचें, इसके लिए अपने शिशु रोग विशेषज्ञ से सलाह लें।

बहुत सी बीमारियों का, जिनसे बुखार आता है, टीकों से बचाव संभव है। सभी टीको के साथ साथ हर साल इन बच्चों को इन्फ्लुएंजा (फ्लू) का टीका भी जरुर दिलवायें।